हिंदी साहित्य में नारी : संघर्ष से सशक्तिकरण तक

डॉ. प्रविण विलास चौगले सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, कमला कॉलेज, कोल्हापुर।

ईमेल -chougale.pravin246@gmail.com

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति, समाज और मानवीय संवेदनाओं का दर्पण रहा है। इसमें नारी का चित्रण विभिन्न रूपों में हुआ है, कभी वह पीड़िता के रूप में दिखाई दी, कभी संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में, तो कभी सशक्तिकरण की प्रतीक बनकर उभरी। नारी का यह सफर हिंदी साहित्य के कालखंडों - आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल और समकालीन काल में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह शोध पत्र हिंदी साहित्य में नारी की बदलती छवि का विश्लेषण करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे साहित्य ने नारी के संघर्ष को आवाज दी और उनके सशक्तिकरण की राह को प्रशस्त किया।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : नारी का प्रारंभिक चित्रण

हिंदी साहित्य का प्रारंभ आदिकाल (लगभग 8वीं से 14वीं शताब्दी) से माना जाता है। इस काल में साहित्य मुख्य रूप से वीरगाथाओं और धार्मिक रचनाओं तक सीमित था। नारी का चित्रण अधिकतर प्रेमिका या वीरांगना के रूप में हुआ, जैसे कि "पृथ्वीराज रासो" में संयोगिता का उल्लेख। यहाँ नारी की पहचान पुरुष के संदर्भ में ही थी—वह या तो राजा की प्रेरणा थी या युद्ध का कारण। उसकी स्वतंत्रता और व्यक्तित्व पर बहुत कम ध्यान दिया गया। भक्तिकाल (14वीं से 17वीं शताब्दी) में नारी की छवि में कुछ परिवर्तन आया। मीरा जैसी कवयित्रियों ने भक्ति के माध्यम से सामाजिक बंधनों को तोड़ा और अपनी आवाज को सशक्त बनाया। मीरा का संघर्ष पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ था, जहाँ उन्होंने प्रेम और भक्ति को अपने सशक्तिकरण का आधार बनाया।

रीतिकाल : नारी का सौंदर्य और सीमित दायरा

रीतिकाल (17वीं से 19वीं शताब्दी) में हिंदी साहित्य में नारी का चित्रण मुख्य रूप से शृंगार रस के अंतर्गत हुआ। केशवदास की "रसिकप्रिया" और बिहारी की रचनाओं में नारी को सौंदर्य की मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया। यहाँ नारी की भावनाएँ और शारीरिक सौंदर्य तो उभरे, पर उसका व्यक्तित्व पितृसत्ता की छाया में ही रहा। उसकी भूमिका प्रेमिका तक सीमित थी, और उसकी स्वतंत्र इच्छा या संघर्ष को नजरअंदाज किया गया। यह काल नारी के सशक्तिकरण की दृष्टि से ठहराव का काल कहा जा सकता है।

आधुनिक काल : संघर्ष की शुरुआत

19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हिंदी साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। आधुनिक काल में हिंदी साहित्य ने नारी के चित्रण को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया है। अब वह केवल त्याग, सहनशीलता और करुणा की मूर्ति नहीं रही, बल्कि एक जागरूक, आत्मनिर्भर और विद्रोही व्यक्तित्व के रूप में उभरी है। आधुनिक लेखकों और लेखिकाओं ने स्त्री की आत्मचेतना, अस्मिता, प्रेम, संघर्ष और स्वतंत्रता की भावना को उकेरा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, महादेवी वर्मा आदि की रचनाओं में नारी सामाजिक बंधनों को तोड़कर अपने अधिकारों के लिए लड़ती दिखाई देती है। आधुनिक साहित्य में नारी अब समाज की निर्माता और बदलाव की वाहक बन चुकी है।

- **भारतेंदु हरिश्चंद्र** : अपने नाटकों और लेखों में उन्होंने नारी शिक्षा और सामाजिक सुधार पर जोर दिया।
- **प्रेमचंद** : "निर्मला", "गोदान" और "सेवासदन" जैसी रचनाओं में प्रेमचंद ने नारी के संघर्ष को चित्रित किया। निर्मला की कहानी दहेज प्रथा और सामाजिक शोषण की मार झेलती नारी की व्यथा को दर्शाती है, वहीं "सेवासदन" में सुमन जैसा पात्र वेश्यावृत्ति से मुक्ति की राह तलाशता है।
- **महादेवी वर्मा** : छायावादी कवयित्री महादेवी ने नारी की आंतरिक पीड़ा और संवेदनशीलता को अपनी कविताओं में व्यक्त किया। "नीरजा" और "दीपशिखा" में नारी का दुख व्यक्त हुआ, पर साथ ही उसकी आत्मिक शक्ति भी उभरी।

इस काल में नारी का चित्रण केवल पीड़िता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसकी जागरूकता और विद्रोह की भावना भी साहित्य में दिखाई देने लगी।

समकालीन साहित्य : सशक्तिकरण की ओर

स्वतंत्रता के बाद हिंदी साहित्य में नारी की छवि में क्रांतिकारी बदलाव आया। लेखिकाओं और लेखकों ने नारी को सशक्त और स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया।

- **मन्नू भंडारी** : "आपका बंटी" और "महाभोज" में नारी के पारिवारिक और सामाजिक संघर्ष को दर्शाया गया, पर साथ ही उसकी निर्णय लेने की क्षमता को भी रेखांकित किया।
- **कृष्णा सोबती** : "मित्रो मरजानी" में मित्रो एक ऐसी नारी है जो अपनी कामुकता और स्वतंत्रता को बिना किसी संकोच के व्यक्त करती है। यह पितृसत्ता के खिलाफ एक सशक्त विद्रोह है।
- **उषा प्रियंवदा** : "रुकोगी नहीं राधिका" में नारी की आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की खोज को चित्रित किया गया।

समकालीन कविता में भी नारी की आवाज मुखर हुई। कवयित्रियाँ जैसे कात्यायनी और अनामिका ने लैंगिक असमानता और नारी के अधिकारों पर कविताएँ लिखीं। यहाँ नारी केवल शोषित नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली योद्धा के रूप में उभरी।

नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में साहित्य की भूमिका :

हिंदी साहित्य ने नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। साहित्य ने नारी के संघर्ष, पीड़ा, इच्छाओं और आत्मबल को स्वर दिया है। कथा, कविता, निबंध और उपन्यासों के माध्यम से नारी की सामाजिक स्थिति पर प्रश्न उठाए गए और बदलाव की प्रेरणा दी गई। लेखिकाओं ने अपने अनुभवों के आधार पर स्त्री चेतना को स्वरूप दिया, जबकि प्रगतिशील लेखकों ने भी नारी अधिकारों का समर्थन किया। साहित्य ने नारी को आत्मनिर्भर, शिक्षित और जागरूक बनाने में विचारात्मक आधार प्रदान किया। इस प्रकार साहित्य समाज में नारी सशक्तिकरण का प्रभावशाली माध्यम बना है।

स्त्री चेतना का जागरण :

साहित्य ने नारी को आत्म-चिंतन, आत्म-विश्लेषण और अस्मिता की पहचान करने का माध्यम दिया। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़ियाँ में स्त्री की गहन मानसिकता का चित्रण किया गया है।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ :

दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा उत्पीड़न जैसे मुद्दों को साहित्य ने साहसपूर्वक उठाया। प्रेमचंद की निर्मला में दहेज और बाल विवाह की भयावहता का यथार्थ चित्रण है।

नारी की आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता :

साहित्य में स्त्रियाँ अब नौकरी करती हैं, निर्णय लेती हैं और स्वतंत्र जीवन जीने की आकांक्षा रखती हैं। उषा प्रियंवदा की पचपन खंभे लाल दीवारें इसका उदाहरण है।

नारी यौनिकता और स्वाभाविक इच्छाओं की अभिव्यक्ति :

कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी में स्त्री की यौनिकता और आत्म-अभिव्यक्ति को बिना झिझक दिखाया गया है।

साहित्य द्वारा प्रेरणा और विचारों का विस्तार :

साहित्य ने समाज में नारी के लिए वैचारिक आंदोलन को जन्म दिया, जिससे बदलाव की प्रक्रिया शुरू हुई। लेखिकाओं जैसे मन्नू भंडारी, इस्मत चुगताई, अमृता प्रीतम आदि ने स्त्री अनुभवों को प्रामाणिकता से प्रस्तुत किया।

नारी शिक्षा और आत्मनिर्भरता की वकालत :

साहित्य ने नारी शिक्षा को आवश्यक बताया ताकि वह अपने अधिकारों को समझ सके। महादेवी वर्मा ने कहा— "स्त्री की सबसे बड़ी शक्ति उसका आत्मबोध और शिक्षा है।"

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में नारी का सफर संघर्ष से सशक्तिकरण तक एक लंबी और प्रेरणादायक यात्रा है। आदिकाल में जहाँ वह पुरुष की छाया में थी, वहीं समकालीन साहित्य में वह अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लड़ रही है। यह परिवर्तन न केवल साहित्यिक विकास को दर्शाता है, बल्कि भारतीय समाज में नारी की बदलती भूमिका का भी प्रतीक है। हिंदी साहित्य ने नारी को आवाज दी, उसके दुख को समझा और उसके सशक्तिकरण के लिए मार्ग प्रशस्त किया। भविष्य में भी साहित्य से यही अपेक्षा है कि वह नारी के संघर्ष और विजय की कहानियों को और सशक्त रूप से प्रस्तुत करे।

संदर्भ सूची

[1] प्रेमचंद, सेवासदन, इंडियन प्रेस, बनारस,1918।

[2] प्रेमचंद, निर्मला, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1926।
[3] महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980।
[4] कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966।
[5] मन्नू भंडारी, आपका बंटी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971।
[6] नामवर सिंह, नारी विमर्श और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005।
[7] उषा प्रियंवदा, पचपन खंभे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1961।